

आई सांवन की तीज हरियाली सजनी।  
देखो झूले की झांकी निराली सजनी॥

वर्षा रितु आने से भूमी हरी है  
हरी लताएं सब फूलों भरी है  
मानो ले आई पुष्प डाली सजनी॥

उमड़ि घुमड़ि जल बादल वर्षे पंख फैलाकर मोर मिल  
हर्षे

जंह तंह छाई है खुशहाली सजनी॥

हरे वृक्ष में देखो झुला सुहाया  
रंगारंगी पुष्पों से कैसा सजाया  
मिल झूलें बाबलु बनमाली सजनी॥

साई की गोद में सिय रघुनाथा  
झूलत प्रेम मगन मिल साथ  
बढ़ी सनेह की है लाली सजनी॥

निरिख निरिख छबि मगन भए मन  
चिरु चिरु जीवे साई जीवन धन  
शोभा न नयन ते टाली सजनी॥

देव गगन से फूल बरसावें जै जै धुनि कर नाचें गावें  
मोहन बीन बजाली सजनी॥

जै साईं मैया जै रघुराई आज झूले की देऊं वाधाई  
भई आंगन उज्याली सजनी॥